

अमेरिका का भविष्य और 18 जुलाई, 2020 - संख्या दो

संदेश को खाना

Jeff Pippenger

2023-08-24

परिवीक्षा समाप्त होने से ठीक पहले यह आदेश दिया जाता है कि "इस पुस्तक की भविष्यवाणी के कथनों को सील न करो।"

और उसने मुझसे कहा, इस पुस्तक की भविष्यवाणी के वचनों को मुहरबंद न कर, क्योंकि समय निकट है। जो अन्यायी है, वह अन्यायी ही बना रहे; और जो अशुद्ध है, वह अशुद्ध ही बना रहे; और जो धर्मी है, वह धर्मी ही बना रहे; और जो पवित्र है, वह पवित्र ही बना रहे। प्रकाशितवाक्य 22:10, 11.

प्रकाशितवाक्य के पाँचवें अध्याय में, परमपिता परमेश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान हैं, और उनके हाथ में एक पुस्तक है जो सात मुहरों से मुहरबंद है।

और मैंने सिंहासन पर विराजमान के दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी, जो भीतर और पिछली ओर लिखी हुई थी, और वह सात मुहरों से मुहरबंद थी। प्रकाशितवाक्य 5:1.

जैसे पद एक से आरम्भ हुआ वृत्तांत अध्याय सात तक आगे बढ़ता है, हम पाते हैं कि यीशु, जिन्हें यहूदा के गोत्र के सिंह के रूप में दर्शाया गया है, वही हैं जो अपने पिता के हाथ से पुस्तक लेते हैं और एक-एक करके मुहरें खोलना शुरू करते हैं। जब वे छठी मुहर खोलते हैं और उस मुहर द्वारा दर्शाए गए संदेश को प्रस्तुत करते हैं, तो अध्याय छह समाप्त हो जाता है। यह एक प्रश्न पर समाप्त होता है, जो अध्याय सात की ओर ले जाता है, जहाँ हमें अध्याय छह के अंतिम पद में उठाए गए प्रश्न का उत्तर मिलता है।

क्योंकि उसके क्रोध का महान दिन आ गया है; और कौन स्थिर रह सकेगा? प्रकाशितवाक्य 6:17.

अध्याय सात में एक लाख चवालीस हज़ार और 'बहुत बड़ी भीड़' का परिचय दिया गया है। अध्याय सात में परमेश्वर के लोगों के प्रस्तुत होने के बाद, हम देखते हैं कि मुहरों में से सातवीं और अंतिम मुहर हटाई जा रही है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसके अतिरिक्त मुहरबंद की गई केवल एक ही और भविष्यवाणी है—अध्याय दस की 'सात गर्जनाएँ'। सरल बात यह है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो एकमात्र भविष्यवाणी मुहरबंद है और जिसे परख का समय समाप्त होने से पहले खोला जा सकता है, वह 'सात गर्जनाएँ' है।

कई वर्षों से, बल्कि दशकों से, Future for America ने यह स्पष्ट किया है कि "सात गर्जनाएँ" क्या दर्शाती हैं। "सात गर्जनाएँ" 11 अगस्त, 1840 से 22 अक्टूबर, 1844 तक मिलराइट आंदोलन के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं। बहन व्हाइट इस तथ्य की पुष्टि करती हैं और यह भी जोड़ती हैं कि "सात गर्जनाएँ" "भविष्य की वे घटनाएँ जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी" का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। जो लोग इन भविष्यवाणी संबंधी वास्तविकताओं से अपरिचित हैं, उनके लिए इन तथ्यों का विस्तृत प्रस्तुतीकरण "हबक्कुक की तालिकाएँ" में पाया जा सकता है।

सात गर्जन के विषय में जो सत्य अतीत में प्रस्तुत किया गया था, वह अब भी सत्य है; परंतु इस वर्ष अगस्त से प्रभु ने इन विषयों पर अपना हाथ हटा लिया है और अधिक समझ प्रकट हुई है। हम प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय से आरम्भ करेंगे, फिर इस अध्याय पर सिस्टर वाइट की टिप्पणी पर विचार करेंगे। यह करने से पहले, हमें दो ऐसे बिंदुओं की पहचान करनी है जो सात गर्जन के विचार से संबंधित नहीं हैं।

पहला बिंदु यह है कि सात गर्जनाओं का जो सत्य अब प्रकट हुआ है, उसकी पहचान करने के लिए, सात गर्जनाएँ जो कुछ भी प्रतिनिधित्व करती हैं उसे अपनी जगह पर स्थापित करने हेतु सत्य की कई धाराओं की आवश्यकता है।

यहाँ—मैं प्रार्थना करता हूँ—संतों का धैर्य है। इससे जुड़ा दूसरा बिंदु यह है कि इन लेखों की ऑडियो प्रस्तुति तैयार करने वाला प्रोग्राम उसके पढ़ने और बोलने के समय की एक सीमा रखता है। प्रत्येक लेख को उसी समय-सीमा के भीतर समाना होगा। इस अध्ययन की शुरुआत से ही मैं आपको सूचित कर रहा हूँ कि सात गर्जनाओं द्वारा प्रस्तुत सत्य को स्थापित करने के लिए कुछ लेखों की आवश्यकता पड़ेगी। अब अध्याय दस पर आते हैं।

और मैंने एक और प्रबल स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जो मेघ से आच्छादित था; और उसके सिर पर इंद्रधनुष था, और उसका मुख मानो सूर्य के समान था, और उसके पाँव अग्नि के स्तम्भों के समान थे। और उसके हाथ में एक छोटी पुस्तक खुली हुई थी; और उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर, और बायाँ पाँव पृथ्वी पर रखा, और ऊँची आवाज़ से पुकारा, जैसे सिंह गर्जता है; और जब वह पुकार चुका, तो सातों गर्जनों ने अपनी वाणी प्रकट की। और जब सातों गर्जनों ने अपनी वाणी प्रकट की, तो मैं लिखने ही वाला था; तभी मैंने स्वर्ग से एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कहती थी, जो बातें सातों गर्जनों ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दे, और उन्हें न लिखना। और जो स्वर्गदूत मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा देखा था, उसने अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया, और उसकी शपथ खाई जो युगानुयुग जीवित रहता है, जिसने स्वर्ग और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, और समुद्र और जो कुछ उसमें है, बनाया, कि अब समय और न रहेगा; परन्तु सातवें स्वर्गदूत की वाणी के दिनों में, जब वह ध्वनि करना आरम्भ करेगा, तो परमेश्वर का भेद पूरा हो जाएगा, जैसा उसने अपने दासों भविष्यद्वक्ताओं को घोषित किया है। और जो आवाज़ मैंने स्वर्ग से सुनी थी, उसने फिर मुझसे कहा, जा, और उस स्वर्गदूत के हाथ में, जो समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, खुली हुई छोटी पुस्तक ले ले। तब मैं स्वर्गदूत के पास गया और उससे कहा, मुझे वह छोटी पुस्तक दे। और उसने मुझसे कहा, इसे ले, और खा ले; यह तेरे पेट में कड़वाहट करेगी, पर तेरे मुँह में मधु के समान मीठी होगी। तब मैंने स्वर्गदूत के हाथ से वह छोटी पुस्तक ली, और उसे खा लिया; और वह मेरे मुँह में मधु के समान मीठी थी; और जैसे ही मैंने उसे खा लिया, मेरा पेट कड़वा हो गया। और उसने मुझसे कहा, तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं के सामने फिर भविष्यवाणी करनी होगी। प्रकाशितवाक्य 10:1-11.

दसवें अध्याय पर टिप्पणी करते हुए, बहन व्हाइट कहती हैं:

यूहन्ना को निर्देश देने वाला वह बलवान स्वर्गदूत कोई और नहीं, बल्कि स्वयं यीशु मसीह थे। समुद्र पर अपना दाहिना पैर और सूखी भूमि पर अपना बायाँ पैर रखना यह दर्शाता है कि शैतान के साथ महान संघर्ष के समापन दृश्यों में वह कौन-सी भूमिका निभा रहे हैं। यह स्थिति संपूर्ण पृथ्वी पर उनके सर्वोच्च सामर्थ्य और अधिकार का द्योतक है। यह संघर्ष युग दर युग अधिक प्रबल और अधिक दृढ़ होता गया था, और ऐसा ही होता रहेगा, उन समापन दृश्यों तक जब अंधकार की शक्तियों की कुशल चालें अपनी चरमसीमा पर पहुँच जाएँगी। शैतान, दुष्ट मनुष्यों के साथ मिलकर, समूचे संसार और उन कलीसियाओं को धोखा देगा जो सत्य का प्रेम स्वीकार नहीं करतीं। परन्तु वह बलवान स्वर्गदूत ध्यान की माँग करता है। वह ऊँचे स्वर में पुकारता है। वह अपनी वाणी की सामर्थ्य और अधिकार उन लोगों को दिखाने वाला है जिन्होंने सत्य का विरोध करने के लिए शैतान के साथ हाथ मिला लिया है।

इन सात गर्जनों के अपनी वाणी उच्चारित करने के बाद, लघु पुस्तक के विषय में दानिय्येल की भाँति यूहन्ना को यह आज्ञा मिलती है: 'जो बातें उन सात गर्जनों ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दे।' ये भावी घटनाओं से संबंधित हैं, जो अपने क्रम में प्रकट होंगी। दिनों के अंत में दानिय्येल अपने भाग के लिए खड़ा होगा। यूहन्ना लघु पुस्तक को मुहर खुली हुई देखता है। तब संसार को दिए जाने वाले प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्वर्गदूतों के संदेशों में दानिय्येल की भविष्यवाणियों का उचित स्थान होता है। लघु पुस्तक की मुहर का खुलना समय-संबंधी संदेश था।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक हैं। एक भविष्यवाणी है, दूसरी प्रकटीकरण है; एक मुहरबंद पुस्तक है, दूसरी खुली हुई पुस्तक है। यूहन्ना ने वे भेद सुने जो गर्जनाओं ने उच्चारित किए, परन्तु उसे उन्हें न लिखने की आज्ञा दी गई।

"यूहन्ना को दी गई विशेष ज्योति, जो सात गर्जनों में व्यक्त की गई थी, उन घटनाओं की एक रूपरेखा थी जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित होने वाली थीं। लोगों के लिए इन बातों को जानना उचित नहीं था, क्योंकि उनके विश्वास की परीक्षा होना आवश्यक था। परमेश्वर की व्यवस्था में अत्यंत अद्भुत और उन्नत सत्य प्रचारित किए जाने थे। प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों का प्रचार किया जाना था, परंतु जब तक ये संदेश अपना विशिष्ट कार्य न कर लें, तब तक आगे का कोई प्रकाश प्रकट नहीं किया जाना था। यह उस स्वर्गदूत द्वारा दर्शाया गया है जो एक पाँव समुद्र पर रखे खड़ा है, और अत्यंत गंभीर शपथ के साथ यह घोषणा करता है कि समय अब और नहीं रहेगा।" सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 971.

जो "शक्तिशाली स्वर्गदूत" 11 अगस्त, 1840 को उतरा था, वह मसीह थे, और उनके हाथ में एक संदेश था जिसे योहन को खाने के लिए कहा गया था। जो योहन ने खाया वह एक संदेश था, पर वह स्पष्ट रूप से ऐसा संदेश था जिसे संसार के लिए नहीं, वरन् परमेश्वर के लोगों के लिए ले जाना था। इस खंड में यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि लक्षित श्रोता कौन हैं, क्योंकि यद्यपि मसीह 11 अगस्त, 1840 को उतरे, जो प्रथम स्वर्गदूत के संदेश के सशक्तिकरण को चिह्नित करता है और इस प्रकार यह इंगित करता है कि प्रथम स्वर्गदूत का संदेश कब सारे संसार में पहुँचाया जाएगा, फिर भी वह छोटी पुस्तक जिसे योहन को खाना था, यह बता रही है कि कब प्रोटेस्टेंटवाद ने नेतृत्व की बागडोर मिलराइटों को सौंप दी। जब मसीह छोटी पुस्तक के साथ उतरे, तब वे मरुभूमि की कलीसिया के साथ अपने वाचा-संबंध का समापन कर रहे थे और साथ ही मिलराइट लोगों की पहचान अपने नये चुने हुए वाचा-जन के रूप में कर रहे थे। मिलराइट ऐसे लोग थे जो पहले परमेश्वर के लोग नहीं थे। भविष्यद्वक्ता कभी एक-दूसरे का विरोध नहीं करते।

और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, अपने पांवों पर खड़ा हो, तब मैं तुझ से बातें करूँगा। तब जब वह मुझ से बोल रहा था, आत्मा मुझ में समा गई, और उसने मुझे मेरे पांवों पर खड़ा कर दिया, और मैं उस को सुनने लगा जो मुझ से बोल रहा था। और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, मैं तुझे इस्राएल की सन्तानों के पास, उस विद्रोही जाति के पास भेजता हूँ, जिसने मुझ से विद्रोह किया है; वे और उनके पितरों ने आज तक मेरे विरुद्ध अपराध किया है। क्योंकि वे निर्लज्ज बालक और कठोरहृदय हैं। मैं तुझे उनके पास भेजता हूँ, और तू उनसे कहना, "यहोवा परमेश्वर यूँ कहता है।" और वे चाहे सुनें, चाहे न सुनें (क्योंकि वे विद्रोही घराना हैं), तो भी वे जानेंगे कि उनके बीच एक नबी रहा है। और तू, हे मनुष्य के पुत्र, उनसे मत डर, न उनके वचनों से डर; चाहे काँटे और झाड़ियाँ तेरे संग हों, और तू बिच्छुओं के बीच रहता हो; उनके वचनों से मत डर, न उनके चेहरों से घबरा, यद्यपि वे विद्रोही घराना हैं। और तू उन्हें मेरे वचन कहेगा, चाहे वे सुनें, चाहे न सुनें; क्योंकि वे अति विद्रोही हैं। परन्तु तू, हे मनुष्य के पुत्र, जो मैं तुझ से कहता हूँ, उसे सुन; उस विद्रोही घराने के समान तू विद्रोही न बन; अपना मुँह खोल, और जो मैं तुझे देता हूँ उसे खा। तब मैंने देखा, क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया गया; और देखो, उसमें एक पुस्तक का चर्मपत्र था। उसने उसे मेरे सामने फैलाया; और वह भीतर और बाहर लिखी हुई थी; और उसमें विलाप, शोक, और हाय लिखे थे। फिर उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, जो कुछ तुझे मिले उसे खा; इस चर्मपत्र को खा, और जा कर इस्राएल के घराने से बातें कर। तब मैंने अपना मुँह खोला, और उसने मुझे वह चर्मपत्र खिलाया। और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, अपना पेट भर कर खा, और जो चर्मपत्र मैं तुझे देता हूँ उससे अपनी अंतड़ियों को भर ले। तब मैं ने उसे खाया; और वह मेरे मुँह में मधु के समान मीठा था। और उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, जा, इस्राएल के घराने के पास जा, और मेरे वचनों से उनसे बातें कर। क्योंकि तुझे किसी अपरिचित वाणी और कठिन भाषा वाली प्रजा के पास नहीं, परन्तु इस्राएल के घराने के पास भेजा गया है; न बहुत-सी ऐसी जातियों के पास, जिनकी वाणी अपरिचित और भाषा कठिन है, जिनके वचन तू समझ नहीं सकती; वास्तव में, यदि मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वे तेरी सुनते। परन्तु इस्राएल का घराना तेरी न सुनेगा, क्योंकि वे मेरी भी न सुनते; क्योंकि इस्राएल का सारा घराना ठीठ और कठोरहृदय है। देख, मैंने तेरा मुख उनके मुखों के विरुद्ध दृढ़ किया है, और तेरे ललाट को उनके ललाट के विरुद्ध दृढ़ किया है। मैंने तेरे ललाट को चकमक से भी कठोर किया है; उनसे मत डर, न उनके चेहरों से घबरा, यद्यपि वे विद्रोही घराना हैं। फिर उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के पुत्र, जो सब वचन मैं तुझ से कहूँगा, उन्हें अपने मन में रख और अपने कानों से सुन। यहजेकेल 2:1-3:10.

जब मसीह वह छोटी पुस्तक लेकर उतरे, जिसे यूहन्ना ने लिया और खा लिया, तो वह उसके 'मुंह में शहद जैसी मिठास' थी। द्रष्टा यूहन्ना और यहजेकेल, दोनों ने मसीह के 'हाथ' से एक संदेश लिया। यहजेकेल—और इसलिए यूहन्ना भी—के पास 'इसाएल के घराने' के लिए संदेश था, इस्राएल के बाहर वालों के लिए नहीं। यदि इस्राएल के बाहर के लोग यह संदेश सुनते, तो वे उसे स्वीकार कर लेते, परन्तु इस्राएल नहीं; क्योंकि इस्राएल का 'सारा घराना' 'धृष्ट और कठोर-हृदय' है। इस्राएल का पूरा घराना (सारा घराना) पूर्णतः विद्रोही था। 1840 में इस्राएल को प्रकाशितवाक्य अध्याय दस में जंगल में कलीसिया के रूप में दर्शाया गया था। उन्होंने अपने परख के समय का प्याला भर दिया था।

यद्यपि इस्राएल उस संदेश को नहीं सुनेगा, फिर भी भविष्यद्वक्ता को उन्हें छोटी पुस्तक का संदेश पहुँचाने की आज्ञा दी गई, ताकि पहले स्वर्गदूत के प्रकाश को अस्वीकार करने के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराया जा सके। न्याय की पुस्तकों में, 'उनके बीच' रहे 'भविष्यद्वक्ता' का संदेश सुनने से इनकार करने के लिए उन्हें उत्तरदायी ठहराया जाना था। भविष्यद्वक्ता को अस्वीकार करना उस संदेश को अस्वीकार करना है जो स्वर्गदूत गब्रिएल ने भविष्यद्वक्ता को दिया था; और गब्रिएल ने वह संदेश स्वयं मसीह से प्राप्त किया था, जिन्होंने उसे पिता से प्राप्त किया था। जब मसीह अपने हाथ में छोटी पुस्तक का संदेश लेकर उतरे, तो वह उनके बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा के उतरने के समानांतर था। उसका पूर्वचित्रण मूसा द्वारा जलती हुई झाड़ी के पास किया गया था, और वही मार्गचिह्न हर सुधार आंदोलन में विद्यमान है।

पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य प्रत्येक महान सुधार या धार्मिक आंदोलन में युग से युग तक एक उल्लेखनीय समानता प्रस्तुत करता है। मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के सिद्धांत सदैव समान रहे हैं। वर्तमान के महत्वपूर्ण आंदोलनों के अतीत में समानांतर मिलते हैं, और पूर्व युगों में कलीसिया के अनुभवों में हमारे समय के लिए अत्यंत मूल्यवान पाठ निहित हैं। महान विवाद, 343.

11 अगस्त, 1840 को उस्मानी प्रभुत्व का पतन (जब यूहन्ना और यहजेकेल ने उस छोटी पुस्तक को खाया जो मसीह के "हाथ" में थी) 1798 में "अंत का समय" पर "आए" पहले स्वर्गदूत के संदेश के "सशक्तीकरण" को चिह्नित करता है। इसे मिलरवादियों के प्रमुख भविष्यसूचक नियम; "एक दिन के लिए एक वर्ष" सिद्धांत की पुष्टि द्वारा "सशक्त" किया गया। तब मसीह ने, जैसा कि उन्होंने अपने बपतिस्मा के समय किया था, मिलरवादी मंदिर की नींव स्थापित करना शुरू किया।

नाथानएल का डगमगाता विश्वास अब दृढ़ हो गया, और उसने उत्तर देकर कहा, 'रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इस्राएल के राजा हैं।' यीशु ने उत्तर देकर उससे कहा, 'क्या इस कारण कि मैंने तुमसे कहा कि मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था, तुम विश्वास करते हो? तुम इससे भी बड़ी बातें देखोगे।' और उसने उससे कहा, 'मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, आगे चलकर तुम सब स्वर्ग को खुला देखोगे, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर ऊपर चढ़ते और नीचे उतरते देखोगे।'

इन्हीं पहले कुछ शिष्यों के माध्यम से व्यक्तिगत प्रयास से ईसाई कलीसिया की नींव रखी जा रही थी। जॉन ने पहले अपने दो शिष्यों को मसीह की ओर निर्देशित किया। फिर इनमें से एक अपने भाई को ढूँढ़ता है और उसे मसीह के पास ले आता है। तब वह फ़िलिप को अपने पीछे चलने के लिए बुलाता है, और वह नाथनेल की खोज में निकल पड़ता है। स्पिरिट ऑफ प्रॉफ़ेसी, वॉल्यूम 2, 66.

जब मसीह 11 अगस्त, 1840 को अपने हाथ में खुली हुई छोटी पुस्तक लेकर उतरे, तो उसका पूर्वचित्रण मसीह के पृथ्वी पर के इतिहास के सुधार आंदोलन में पहले ही किया गया था, क्योंकि हर सुधार आंदोलन में वही मार्गचिह्न होते हैं। मूसा और जिस सुधार आंदोलन का उन्होंने नेतृत्व किया, उसमें भी वही मार्गचिह्न थे। जलती झाड़ी पर मूसा का अनुभव मसीह के बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा के उतरने का प्रतीक था; वही आगे चलकर 1840 का प्रतीक बना, और 1840 आगे चलकर 11 सितंबर, 2001 का प्रतीक है, जब प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह का शक्तिशाली स्वर्गदूत उतरा।

पहले स्वर्गदूत के संदेश के "आगमन", दूसरे स्वर्गदूत के संदेश के "आगमन" और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के "आगमन"—इन सबका प्रतिनिधित्व स्वर्गदूत करते हैं। पहले स्वर्गदूत के हाथ में एक छोटी पुस्तिका है, दूसरे के हाथ में एक लिखित दस्तावेज़ था, और तीसरे के हाथ में एक चर्मपत्र था। दो या तीन की गवाही पर एक सत्य स्थापित होता है। तीनों स्वर्गदूत, चाहे अपने आगमन पर हों या सशक्त किए जाने पर, अपने हाथ में एक संदेश लिए हुए हैं।

यूहन्ना और यहजेकेल उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्होंने उस समय संदेश खाया जब प्रथम स्वर्गदूत का संदेश 'सशक्त' हुआ था; यह 1798 में जब प्रथम स्वर्गदूत का संदेश 'आया' था, उस समय से भिन्न एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है।

किसी संदेश के "आगमन" और उसके "सशक्तिकरण" के बीच का अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण भेद है, जिस पर ध्यान देना चाहिए। निम्नलिखित अंश पर विचार करते समय ध्यान दें कि पहले स्वर्गदूत का उद्देश्य प्रकाशितवाक्य अठारह में उस स्वर्गदूत के उद्देश्य के समान है, जो अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशित करता है। यह भी ध्यान रखें कि प्रत्येक संदेश एक विभाजन उत्पन्न करता है, जिससे उपासकों की दो श्रेणियाँ बनती हैं।

मुझे यह दिखाया गया कि पृथ्वी पर जो कार्य चल रहा था, उसमें समस्त स्वर्ग ने कितनी गहन रुचि ली थी। यीशु ने एक पराक्रमी स्वर्गदूत [पहला स्वर्गदूत] को नियुक्त किया कि वह नीचे उतरकर पृथ्वी के निवासियों को चेतावनी दे कि वे उसके दूसरे प्रकट होने के लिए तैयार हों। जब वह स्वर्गदूत स्वर्ग में यीशु की उपस्थिति से प्रस्थान किया, तो उसके आगे अत्यन्त उज्ज्वल और महिमामय प्रकाश चला। मुझे बताया गया कि उसका उद्देश्य अपनी महिमा से पृथ्वी को प्रकाशमान करना और मनुष्यों को परमेश्वर के आने वाले क्रोध के विषय में चेतावनी देना था। बहुतों ने उस प्रकाश को ग्रहण किया। इनमें से कुछ अत्यन्त गंभीर प्रतीत हुए, जबकि अन्य आनन्दित और विभोर थे। जिन्होंने भी प्रकाश को ग्रहण किया, उन्होंने अपना मुख स्वर्ग की ओर किया और परमेश्वर की महिमा की। यद्यपि वह सब पर उँडेला गया, तथापि कुछ केवल उसके प्रभाव में आए, पर उसे हृदय से स्वीकार नहीं किया। बहुत से लोग अत्यन्त क्रोध से भर गए। धर्मगुरु और लोग दुष्टों के साथ मिल गए और उस पराक्रमी स्वर्गदूत द्वारा उँडेला गया प्रकाश का डटकर विरोध किया। परन्तु जिन सब ने उसे स्वीकार किया, वे संसार से अलग हो गए और आपस में घनिष्ठ रूप से एक हो गए।

शैतान और उसके स्वर्गदूत जितने अधिक से अधिक लोगों का ध्यान प्रकाश से हटाने के प्रयास में तत्परता से लगे हुए थे। जिन्होंने उसे अस्वीकार किया, वे अंधकार में छोड़ दिए गए। मैंने देखा कि परमेश्वर का स्वर्गदूत बड़े मनोयोग से उन लोगों पर नज़र रखे हुए था जो अपने को उसके लोग कहते थे, ताकि जब उनके सामने स्वर्गीय मूल का संदेश प्रस्तुत किया जाए, तब वे जो चरित्र विकसित करें, उसे वह दर्ज करे। और जब बहुत से लोग, जो यीशु से प्रेम का दावा करते थे, तिरस्कार, उपहास और घृणा के साथ उस स्वर्गीय संदेश से मुँह मोड़ लिया, तब हाथ में चर्मपत्र लिए एक स्वर्गदूत ने वह लज्जाजनक अभिलेख दर्ज किया। समस्त स्वर्ग इस बात से क्षोभ से भर गया कि यीशु को उसके कहे जाने वाले अनुयायियों ने इस प्रकार उपेक्षित किया।

मैंने विश्वासियों की निराशा देखी, क्योंकि वे अपने प्रभु को अपेक्षित समय पर न देख सके। परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि वह भविष्य को छिपाए और अपने लोगों को निर्णय के बिंदु तक ले आए। मसीह के आगमन के निश्चित समय का प्रचार किए बिना, परमेश्वर द्वारा ठहराया गया कार्य पूरा नहीं हुआ होता। शैतान बहुतों को इस ओर ले जा रहा था कि वे न्याय और अनुग्रह-काल के अंत से संबंधित महान घटनाओं को बहुत दूर भविष्य में देखें। यह आवश्यक था कि लोगों को इस स्थिति में लाया जाए कि वे वर्तमान तैयारी के लिए पूरे मन से प्रयत्न करें।

समय बीतने पर, जिन्होंने स्वर्गदूत का प्रकाश पूरी तरह ग्रहण नहीं किया था, वे उन लोगों के साथ मिल गए जिन्होंने उस संदेश का तिरस्कार किया था, और वे निराश लोगों पर उपहास के साथ टूट पड़े। स्वर्गदूतों ने मसीह के नामधारी अनुयायियों की स्थिति पर ध्यान दिया। निश्चित समय के बीत जाने ने उन्हें परखा और सिद्ध कर दिया, और बहुत से लोग तराजू में तौले जाने पर कम पाए गए। वे जोर-शोर से अपने को ईसाई बताते रहे, फिर भी लगभग हर बात में मसीह का अनुसरण करने में असफल रहे। यीशु के नामधारी अनुयायियों की ऐसी अवस्था

पर शैतान उल्लसित हुआ।

वह उन्हें अपने जाल में फंसा चुका था। उसने अधिकांश को सीधी राह छोड़कर भटका दिया था, और वे स्वर्ग तक पहुँचने के लिए किसी और रास्ते से चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। स्वर्गदूतों ने देखा कि शुद्ध और पवित्र लोग सिव्योन में पापियों और संसार-प्रेमी कपटियों के साथ घुल-मिल गए हैं। उन्होंने यीशु के सच्चे चेहरे की रक्षा की थी; परन्तु भ्रष्ट लोग पवित्रों को प्रभावित कर रहे थे। जिनके हृदय यीशु को देखने की तीव्र लालसा से जल रहे थे, उन्हें स्वयं को उनके भाई कहलाने वालों ने उसके आगमन के बारे में बोलने से रोक दिया। स्वर्गदूतों ने इस दृश्य को देखा और उन शेष लोगों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की जो अपने प्रभु के प्रकट होने से प्रेम करते थे।

एक अन्य पराक्रमी स्वर्गदूत [द्वितीय स्वर्गदूत] को पृथ्वी पर उतरने के लिए नियुक्त किया गया। यीशु ने उसके हाथ में एक लिखित संदेश रखा, और जैसे ही वह पृथ्वी पर आया, उसने पुकारा, 'बाबुल गिर गया, गिर गया।' तब मैंने निराश जनों को फिर स्वर्ग की ओर अपनी आँखें उठाते देखा; वे अपने प्रभु के प्रकट होने को विश्वास और आशा से निहार रहे थे। परन्तु बहुत-से लोग मानो सोए हुए हों, ऐसी जड़-सी अवस्था में प्रतीत होते थे; फिर भी मुझे उनके चेहरों पर गहरे शोक की रेखाएँ दिखाई देती थीं। निराश जनों ने शास्त्रों से समझा कि वे विलंब के समय में हैं, और कि उन्हें दर्शन की पूर्ति के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए। वही प्रमाण जिसने उन्हें 1843 में अपने प्रभु की बाट जोहने के लिए प्रेरित किया था, 1844 में भी उसकी अपेक्षा करने के लिए प्रेरित करता रहा। तथापि मैंने देखा कि अधिकांश में वह उत्साह नहीं रहा जो 1843 में उनके विश्वास की विशेषता था। उनकी निराशा ने उनके विश्वास को शिथिल कर दिया था।

जब परमेश्वर की प्रजा दूसरे स्वर्गदूत की पुकार में एकजुट हुई, तो स्वर्गीय सेना ने इस संदेश के प्रभाव को अत्यंत गहन रुचि से देखा। उन्होंने देखा कि बहुत से लोग, जो मसीही नाम धारण करते थे, तिरस्कार और उपहास के साथ उन पर पलट पड़े जो निराश हुए थे। जब ठट्ठा करने वाले होंठों से ये शब्द निकले, 'तुम अभी तक ऊपर नहीं गए!' तो एक स्वर्गदूत ने उन्हें लिख लिया। स्वर्गदूत ने कहा, 'वे परमेश्वर का उपहास करते हैं।' मेरा ध्यान प्राचीन काल में किए गए एक समान पाप की ओर दिलाया गया। एलिय्याह स्वर्ग में उठा लिए गए थे, और उनकी चादर एलीशा पर गिर पड़ी थी। तब दुष्ट युवक, जिन्होंने अपने माता-पिता से परमेश्वर के जन का तिरस्कार करना सीखा था, एलीशा के पीछे हो लिए और ठट्ठा करते हुए चिल्लाए, 'ऊपर चला जा, हे गंजे; ऊपर चला जा, हे गंजे।' इस प्रकार उसके सेवक का अपमान करके उन्होंने परमेश्वर का अपमान किया और वहीं उसी समय अपनी सज़ा पाई। इसी प्रकार, जिन्होंने पवित्र जनों के ऊपर उठाए जाने के विचार का उपहास और ठट्ठा किया है, उन पर परमेश्वर का कोप आएगा, और उन्हें यह महसूस कराया जाएगा कि अपने रचयिता के साथ खिलवाड़ करना कोई हल्की बात नहीं है।

यीशु ने अन्य स्वर्गदूतों को आदेश दिया कि वे शीघ्र उड़कर उसके लोगों के मुरझाते हुए विश्वास को पुनर्जीवित और सुदृढ़ करें तथा उन्हें दूसरे स्वर्गदूत के संदेश और स्वर्ग में शीघ्र होने वाले महत्वपूर्ण कदम को समझने के लिए तैयार करें। मैंने देखा कि इन स्वर्गदूतों ने यीशु से महान शक्ति और प्रकाश प्राप्त किया और अपने आदेश को पूरा करने, अर्थात् दूसरे स्वर्गदूत की उसके कार्य में सहायता करने के लिए, शीघ्रता से पृथ्वी पर उड़ आए। जब स्वर्गदूत पुकार उठे, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे मिलने निकलो,' तब परमेश्वर के लोगों पर एक महान प्रकाश चमका। फिर मैंने देखा कि ये निराश लोग उठ खड़े हुए और दूसरे स्वर्गदूत के साथ सामंजस्य में यह घोषणा की, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे मिलने निकलो।' स्वर्गदूतों का प्रकाश हर जगह के अंधकार को भेद गया। शैतान और उसके स्वर्गदूतों ने इस प्रकाश के फैलने और अपना नियत प्रभाव डालने से रोकने का प्रयास किया। वे स्वर्ग से आए स्वर्गदूतों का विरोध करते हुए उनसे कहते थे कि परमेश्वर ने लोगों को धोखा दिया है, और यह कि अपने सारे प्रकाश और शक्ति के होते हुए भी वे संसार को यह विश्वास नहीं दिला सकते कि मसीह आ रहा है। परन्तु, यद्यपि शैतान ने मार्ग रोकने और लोगों के मनो को प्रकाश से हटाने का भरसक प्रयास किया, फिर भी परमेश्वर के स्वर्गदूत अपना कार्य करते रहे....

"जब पवित्र स्थान में यीशु की सेवकाई समाप्त हुई और वह परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर गया और उस सन्दूक के सामने खड़ा हुआ जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था थी, तब उसने संसार के लिए तीसरा संदेश लेकर एक और

पराक्रमी स्वर्गदूत भेजा। स्वर्गदूत के हाथ में एक चर्मपत्र रखा गया, और जब वह सामर्थ और महिमा के साथ पृथ्वी पर उतरा, तो उसने मनुष्य तक कभी पहुँचाई गई सबसे भयानक धमकी के साथ एक भयावह चेतावनी सुनाई। यह संदेश परमेश्वर की सन्तानों को उनके आगे आने वाली परीक्षा और व्यथा की घड़ी दिखाकर उन्हें सतर्क करने के लिए था। स्वर्गदूत ने कहा, 'उन्हें पशु और उसकी प्रतिमा के साथ सीधे टकराव में लाया जाएगा। उनके लिए अनन्त जीवन की एकमात्र आशा यह है कि वे दृढ़ बने रहें। यद्यपि उनका जीवन दाँव पर होगा, उन्हें सत्य को दृढ़ता से थामे रखना होगा।' तीसरा स्वर्गदूत अपना संदेश इस प्रकार समाप्त करता है: 'यहाँ पवित्र जनों का धैर्य है: यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं और यीशु पर विश्वास रखते हैं।' जब उसने ये वचन दोहराए, तो उसने स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर संकेत किया। जो इस संदेश को अपनाते हैं, उन सबके मन परमपवित्र स्थान की ओर निर्देशित किए जाते हैं, जहाँ यीशु सन्दूक के सामने खड़ा है और उन सबके लिए अपनी अंतिम मध्यस्थता कर रहा है जिनके लिए दया अभी भी ठहरी हुई है, और उनके लिए भी जिन्होंने अज्ञानवश परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है। यह प्रायश्चित्त धर्मी मृतकों के लिए भी और धर्मी जीवितों के लिए भी किया जाता है। इसमें वे सब सम्मिलित हैं जो मसीह पर भरोसा रखते हुए मर गए, परन्तु परमेश्वर की आज्ञाओं पर प्रकाश न पाने के कारण उनकी विधियों का उल्लंघन करते हुए अज्ञानवश पाप कर बैठे।" प्रारंभिक लेखन, 245-254.

उसी पुस्तक में कुछ पृष्ठ आगे, अभी जिन अवधारणाओं का उल्लेख किया गया है, उन्हीं को संबोधित करते हुए, सिस्टर व्हाइट यह इंगित करती हैं कि मिलराइट इतिहास में तीन संदेशों के अस्वीकार का प्रतिरूप मसीह के इतिहास में मिलता है। वहाँ वह दो गवाह प्रस्तुत करती हैं, जो एक प्रगतिशील परीक्षा-प्रक्रिया का संकेत देते हैं, जिसमें अगले परीक्षण तक बढ़ने के लिए प्रत्येक परीक्षा में विजय आवश्यक होती है।

मैंने एक ऐसे समूह को देखा जो सतर्क और दृढ़ खड़ा था, और उन लोगों को तनिक भी समर्थन नहीं दे रहा था जो समुदाय के स्थापित विश्वास को डगमगाने का प्रयत्न करते। परमेश्वर ने उन पर प्रसन्नता से दृष्टि की। मुझे तीन पायदान दिखाए गए—पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेश। मेरे साथ रहने वाले स्वर्गदूत ने कहा, "हाय उस पर जो इन संदेशों के किसी पत्थर को भी हिलाए या किसी कील को भी छेड़े। इन संदेशों की सच्ची समझ अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्माओं का भाग्य इस बात पर टिका है कि इन्हें किस प्रकार ग्रहण किया जाता है।" मुझे फिर से इन संदेशों के माध्यम से ले जाया गया, और मैंने देखा कि परमेश्वर की प्रजा ने अपना अनुभव कितनी भारी कीमत चुका कर प्राप्त किया था। वह बहुत दुःख और कठोर संघर्ष के द्वारा प्राप्त हुआ था। परमेश्वर ने उन्हें कदम-दर-कदम अग्रसर किया, यहाँ तक कि उसने उन्हें एक ठोस, अचल मंच पर खड़ा कर दिया। मैंने देखा कि कुछ व्यक्ति उस मंच के पास आए और नींव की जाँच की। कुछ ने आनन्द के साथ तुरंत उस पर कदम रखा। दूसरों ने नींव में दोष ढूँढना शुरू किया। वे चाहते थे कि सुधार किए जाएँ, तब मंच अधिक पूर्ण होगा और लोग बहुत अधिक प्रसन्न होंगे। कुछ लोग उसे परखने के लिए मंच से उतर गए और घोषित किया कि इसकी नींव गलत ढंग से डाली गई है। परन्तु मैंने देखा कि लगभग सब उस मंच पर दृढ़तापूर्वक खड़े रहे और जिन्होंने उतर गए थे उन्हें अपनी शिकायतें बंद करने के लिए समझाया; क्योंकि परमेश्वर प्रधान शिल्पी था, और वे उसी के विरुद्ध लड़ रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के अद्भुत कार्यों का वर्णन किया, जिन्होंने उन्हें उस दृढ़ मंच तक पहुँचा दिया था, और मिलकर अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठाईं और ऊँचे स्वर से परमेश्वर की महिमा की। इसका प्रभाव उन में से कुछ पर पड़ा जिन्होंने शिकायत की थी और मंच छोड़ दिया था, और वे नम्र मुख-भाव के साथ फिर से उस पर चढ़ गए।

मेरा ध्यान मसीह के प्रथम आगमन की घोषणा की ओर वापस दिलाया गया। यूहन्ना को एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में [प्रथम स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिरूप] यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया। जिन्होंने यूहन्ना की गवाही को अस्वीकार किया, वे यीशु की शिक्षाओं से लाभान्वित नहीं हुए [द्वितीय स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिरूप]। उस संदेश के प्रति उनका विरोध, जो उसके आने की पूर्वसूचना देता था, उन्हें ऐसी स्थिति में ले आया जहाँ वे यह कि वह मसीहा है, इसके सबसे प्रबल प्रमाण भी आसानी से ग्रहण न कर सके। शैतान ने उन लोगों को, जिन्होंने यूहन्ना के संदेश को ठुकरा दिया था, और आगे बढ़ाया—कि वे मसीह को अस्वीकार करें और उसे क्रूस पर चढ़ाएँ [तृतीय स्वर्गदूत के संदेश का प्रतिरूप]। ऐसा करते हुए उन्होंने अपने आप को ऐसी दशा में ला खड़ा किया कि वे

पिन्तेकुस्त के दिन का आशीर्वाद [प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत का प्रतिरूप] प्राप्त न कर सके, जो उन्हें स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रवेश का मार्ग सिखाता। मंदिर के परदे का फटना यह दर्शाता था कि यहूदी बलिदानों और विधि-विधानों को अब और स्वीकार नहीं किया जाएगा। महान बलिदान प्रस्तुत किया जा चुका था और स्वीकार भी कर लिया गया था, और पवित्र आत्मा, जो पिन्तेकुस्त के दिन उतरा था, ने चेलों के मनो को स्थलीय पवित्रस्थान से स्वर्गीय पवित्रस्थान की ओर ले गया, जहाँ यीशु अपने ही लहू के द्वारा प्रवेश कर चुका था, ताकि वह अपने चेलों पर अपने प्रायश्चित्त के लाभ उंडेले। परन्तु यहूदी पूर्ण अंधकार में छोड़ दिए गए। उद्धार की योजना के विषय में जो प्रकाश उन्हें मिल सकता था, वह सब उन्होंने खो दिया, और फिर भी वे अपने निष्फल बलिदानों और भेंटों पर भरोसा करते रहे। स्वर्गीय पवित्रस्थान ने स्थलीय का स्थान ले लिया था, फिर भी उन्हें इस परिवर्तन का ज्ञान न था। इसलिए वे पवित्र स्थान में मसीह की मध्यस्थता से कोई लाभ नहीं उठा सके।

"बहुत-से लोग मसीह को अस्वीकार करने और उन्हें क्रूस पर चढ़ाने में यहूदियों के आचरण को भय के साथ देखते हैं; और जब वे उनके शर्मनाक दुर्व्यवहार का इतिहास पढ़ते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे उनसे प्रेम करते हैं, और पतरस की तरह उन्हें इनकार नहीं करते, या यहूदियों की तरह उन्हें क्रूस पर नहीं चढ़ाते। परन्तु जो परमेश्वर सबके हृदयों को पढ़ता है, उसने यीशु के प्रति उस प्रेम की परीक्षा ली जिसका वे महसूस करने का दावा करते थे। समस्त स्वर्ग ने पहले स्वर्गदूत के संदेश के स्वागत को अत्यंत गहरी रुचि से देखा। परन्तु बहुत-से लोग जो यीशु से प्रेम का दावा करते थे और क्रूस की कहानी पढ़ते समय आँसू बहाते थे, उन्होंने उसके आने के शुभ समाचार का उपहास किया। संदेश को आनन्द से ग्रहण करने के बजाय, उन्होंने उसे भ्रम घोषित किया। उन्होंने उन लोगों से घृणा की जो उसके प्रकट होने से प्रेम रखते थे और उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया। जिन्होंने पहले संदेश को अस्वीकार किया, वे दूसरे से लाभान्वित न हो सके; न ही वे मध्यरात्रि की पुकार से लाभान्वित हुए, जो उन्हें विश्वास के द्वारा यीशु के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान के परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार करने हेतु थी। और पहले के दो संदेशों को अस्वीकार कर उन्होंने अपनी समझ को इतना अंधकारमय कर लिया है कि वे तीसरे स्वर्गदूत के संदेश में, जो परमपवित्र स्थान में प्रवेश का मार्ग दिखाता है, कोई प्रकाश नहीं देख पाते। मैंने देखा कि जैसे यहूदियों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, वैसे ही नाममात्र की कलीसियाओं ने इन संदेशों को क्रूस पर चढ़ा दिया है; इसलिए उन्हें परमपवित्र में जाने के मार्ग का ज्ञान नहीं है, और वे वहाँ यीशु की मध्यस्थता से लाभान्वित नहीं हो सकते। यहूदियों की तरह, जो अपने निष्फल बलिदान चढ़ाते थे, वे उस कक्ष की ओर अपनी निष्फल प्रार्थनाएँ भेजते हैं जिसे यीशु छोड़ चुके हैं; और शैतान, इस छल से प्रसन्न होकर, धार्मिक रूप धारण करता है, और इन कहलाने वाले मसीहियों के मनो को अपनी ओर मोड़ देता है, अपनी शक्ति, अपने चिन्हों और झूठे अद्भुत कार्यों के द्वारा काम करते हुए, उन्हें अपने जाल में बाँध देता है।" अर्ली राइटिंग्स, 258-261.

पुस्तक अर्ली राइटिंग्स के अंशों को फ्यूचर फॉर अमेरिका की सेवकाई के माध्यम से बार-बार सिखाया गया है। लेकिन ये अंश जिन सत्यों को दर्शाते हैं, उनमें से कुछ अनदेखे रह गए हैं।

मिलराइट आंदोलन के इतिहास के मार्गचिह्न बाइबल के कई सुधारवादी आंदोलनों पर आधारित हैं। प्रत्येक सुधारवादी आंदोलन में पाए जाने वाले मार्गचिह्नों से कुछ परिचितता के बिना, यह काफी असंभाव्य है कि कोई यह समझ पाए कि किसी संदेश के 'आने' और उसके 'सशक्त' होने के बीच के भेद का महत्व क्या है। यह भी संभव है कि समानांतर सुधारवादी आंदोलनों से परिचित अनेक लोग सुधारवादी आंदोलनों के विभिन्न मार्गचिह्नों की कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषताओं को नज़रअंदाज़ कर गए हों।

"सात गर्जन" जो एडवेंटवाद की शुरुआत की घटनाओं और एडवेंटवाद के अंत की घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह प्रकाश है जिसकी मुहर अनुग्रह का काल समाप्त होने से ठीक पहले खोली जाती है। हमें बताया गया है कि "सात गर्जन" दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं: "घटनाओं की एक रूपरेखा जो पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित होंगी," और "भविष्य की घटनाएँ जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी।" "सात गर्जन" में अल्फा और ओमेगा के हस्ताक्षर निहित हैं।

'पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों' के अंतर्गत जो घटनाएँ घटित हुईं, उनका 'विवरण' तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के अंतर्गत घटित होने वाली घटनाओं का प्रतिरूप है। जब यूहन्ना को यह आज्ञा दी गई कि वह सात गर्जनाओं ने जो कहा उसे न लिखे, तो यह आज्ञा दानिय्येल को अपनी पुस्तक को मुहरबंद करने की जो आज्ञा दी गई थी, उसी का प्रतिरूप थी; क्योंकि हमें बताया गया है कि 'जब सात गर्जनाओं ने अपनी वाणी प्रकट कर दी,' तब छोटी पुस्तक के संबंध में दानिय्येल की ही तरह यूहन्ना को भी यह निर्देश मिलता है: 'जो बातें सात गर्जनाओं ने कही हैं, उन्हें मुहरबंद कर दो।'

यहेजकेल और यूहन्ना दोनों 1840 में पहले स्वर्गदूत के सशक्तिकरण के समय परमेश्वर के लोगों द्वारा संदेश को खा लेने का चित्रण करते हैं, और नबी यिर्मयाह उस निराशा को दर्शाते हैं जो तब परमेश्वर के लोगों के बीच हुई जब पहले स्वर्गदूत का संदेश असफल होता हुआ प्रतीत हुआ।

तेरे वचन मिले, और मैंने उन्हें खा लिया; और तेरे वचन मेरे लिये हर्ष और मेरे हृदय का आनन्द बने, क्योंकि मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ, हे सेनाओं के यहोवा परमेश्वर। मैं ठट्टा करनेवालों की सभा में न बैठा, न आनन्दित हुआ; मैं तेरे हाथ के कारण अकेला बैठा रहा, क्योंकि तू ने मुझे रोष से भर दिया। मेरा दर्द क्यों सदा बना रहता है, और मेरा घाव क्यों अचिकित्स्य है, जो चंगा होना नहीं चाहता? क्या तू सर्वथा मेरे लिये झूठा ठहरेगा, और ऐसे जल के समान जो धोखा देते हैं? इस कारण यहोवा यों कहता है: यदि तू लौटे, तो मैं तुझे फिर लौटा लूँगा, और तू मेरे सामने खड़ा रहेगा; और यदि तू निकृष्ट में से उत्तम को अलग करे, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरी ओर फिरें, परन्तु तू उनकी ओर न फिरना। और मैं तुझे इस लोगों के विरुद्ध एक किलेबंद पीतल की दीवार कर दूँगा; वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे, परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और छुड़ाने के लिये तेरे साथ हूँ, यहोवा की यह वाणी है। और मैं तुझे दुष्टों के हाथ से छुड़ाऊँगा, और अत्याचारियों के हाथ से तेरा उद्धार करूँगा। यिर्मयाह 15:16-21.

यिर्मयाह ने छोटी पुस्तक के वचन पाए थे, जैसे यूहन्ना और यहेजकेल ने, और उसने भी उस संदेश को खा लिया था, पर वह संदेश एक ऐसा संदेश (जल) बन गया था जो विफल हो गया था। यह मानो परमेश्वर ने झूठ बोला हो, जो कि निश्चित ही असंभव है, पर 'झूठ' का यह आरोप हबक्कूक में दर्शाई गई पहली मिलराइट निराशा के संदर्भ में यिर्मयाह को स्थित करने की कुंजी प्रदान करता है।

मैं अपने पहरे पर खड़ा रहूँगा, और मीनार पर अपना स्थान लूँगा, और यह देखने के लिए चौकस रहूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे ताड़ना दी जाए तब मैं क्या उत्तर दूँगा। और प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट लिख दे, ताकि उसे पढ़ने वाला दौड़ सके। क्योंकि यह दर्शन अभी नियत समय के लिए है, परन्तु अंत में यह बोलेगा, और झूठ न बोलेगा; यदि यह देर करे, तो उसकी प्रतीक्षा कर; क्योंकि वह निश्चय ही आएगा, वह देर न करेगा। हबक्कूक 2:1-3.

पहले स्वर्गदूत के संदेश का दर्शन 1843 के पायनियर चार्ट पर लिखा गया था, जिसे परमेश्वर के 'हाथ' ने निर्देशित किया था।

"मैंने देखा है कि 1843 का चार्ट प्रभु के हाथ द्वारा निर्देशित किया गया था, और इसे बदला नहीं जाना चाहिए; कि अंक वैसे ही थे जैसे वे चाहते थे; कि उनका हाथ उस पर था और उसने कुछ अंकों में हुई एक गलती को छिपाए रखा, ताकि उनका हाथ हटाए जाने तक कोई उसे देख न सके।" Early Writings, 74.

1843 के "नियत समय" को चार्ट पर दर्शाया गया था, और इसी कारण उसे 1843 का चार्ट कहा जाता है। यह 1842 में प्रकाशित हुआ, हबक्कूक में दिए गए उस आदेश की पूर्ति में कि "दर्शन लिख, और उसे पट्टिकाओं पर साफ-साफ लिख।" दर्शन को "पट्टिकाओं" पर, बहुवचन में, स्पष्ट किया जाना था; इस प्रकार यह इंगित करता है कि जब प्रभु ने 1843 के चार्ट की गलती से अपना हाथ हटा लिया, तो वह गलती 1850 के अग्रणी चार्ट पर सुधारी जाएगी। उस गलती ने पहली निराशा उत्पन्न की, और यिर्मयाह उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने 11 अगस्त, 1840 को छोटी पुस्तक खाई थी और जब 1843 का नियत समय विफल हुआ तो वे निराश हुए।

1840 में जब यिर्मयाह ने उस छोटी पुस्तक को खा लिया था, तो वह उसके हृदय का 'आनन्द और हर्ष' थी, पर जब निराशा आई, तो वह अब 'हर्षित' नहीं रहा, और वह परमेश्वर के 'हाथ' के कारण 'अकेला बैठा'। परमेश्वर के हाथ ने 'कुछ गणनाओं में एक गलती' को ढक दिया था, जिससे यिर्मयाह इस संभावना पर विचार करने लगा कि कहीं परमेश्वर ने झूठ तो नहीं बोला। यिर्मयाह को दिया गया वादा यह था कि यदि वह अपनी निराशा से 'लौट' आए, तो परमेश्वर यिर्मयाह को अपना 'मुख' बना देगा। यदि यिर्मयाह अपनी निराशा से परमेश्वर के पास लौट आए और यह पहचान ले कि वह दस कुँवारियों के दृष्टान्त के प्रतीक्षा-काल में है, तो परमेश्वर उसे अपना मुख बनाकर उपयोग करेगा, ताकि वह ठीक-ठीक यह बताए कि दर्शन कब आना चाहिए और अब और न ठहरे।

यहाँ इन तथ्यों को प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह स्थापित करना है कि स्वर्गदूतों के सभी संदेशों के साथ, उनके "आगमन" और "सशक्तिकरण" एक जीवन-मरण का संदेश प्रस्तुत करते हैं, जिससे उपासकों के दो वर्ग बनते हैं। ये तीन स्वर्गदूत एक प्रगतिशील परीक्षात्मक प्रक्रिया के तीन चरण हैं। हमारे अभिप्रेत बिंदु के लिए इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि, यद्यपि "समाप्ति का समय" के 1989 में आगमन के तुरंत बाद ही सात गर्जनाओं की समझ पहचान ली गई थी, जब दानिय्येल की अंतिम छह आयतों की मुहर खोली गई और न्याय के समापन की घोषणा हुई, फिर भी तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास के अंत में सात गर्जनाओं की मुहर एक बार फिर खोली जाती है।

एडवेंटवाद की शुरुआत का इतिहास 1798 में प्रथम स्वर्गदूत की मुहर खुलने से शुरू होता है, और यह उस सत्य की मुहर खुलने पर समाप्त होता है, जिस पर निराशा उत्पन्न करने के लिए प्रभु ने अपना हाथ रखा हुआ था। इसके बाद उन्होंने अपना हाथ हटा लिया (मुहर खोल दी), और प्रतीक्षा-काल के संदेश को प्रकट किया।

एडवेंटवाद के अंत का इतिहास 1989 में तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की मुहर खुलने से शुरू होता है, और यह उस सत्य की मुहर खुलने पर समाप्त होता है, जिस पर निराशा उत्पन्न करने के लिए प्रभु ने अपना हाथ रखकर उसे ढक दिया था। वह अब अपना हाथ हटा रहे हैं, और इस प्रकार पहली निराशा और विलंब के समय के संदेश की मुहर खोल रहे हैं। वह 18 जुलाई, 2020 के उद्देश्य की मुहर खोल रहे हैं।

इस कारण यहीवा यूँ कहता है: यदि तू लौट आए, तो मैं तुझे फिर से ले आऊँगा, और तू मेरे सामने ठहरेगा; और यदि तू निकृष्ट में से उत्तम को अलग करे, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरे पास लौटें, परन्तु तू उनके पास न लौटना। और मैं तुझे इस प्रजा के लिये एक दृढ़ पीतल की दीवार बना दूँगा; वे तेरे विरुद्ध लड़ेंगे, परन्तु तेरे ऊपर प्रबल न होंगे; क्योंकि मैं तुझे बचाने और छुड़ाने के लिये तेरे साथ हूँ, यहीवा की यह वाणी है। और मैं तुझे दुष्टों के हाथ से छुड़ाऊँगा, और क्रूरों के हाथ से तुझे छुड़ा लूँगा। यिर्मयाह 15:19-21.